

उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन

सुरेश चन्द्र जायसवाल¹ ; डॉ.बेबी कुमारी²

DOI: <http://doi.org/10.5281/zenodo.23403130>

Review: 03/09/2026

Acceptance: 08/09/2026

Publication:

15/10/2026

सारांश: प्रस्तुत शोध का उद्देश्य उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना है। सामान्यतः यह धारणा प्रचलित है कि छात्रों को छात्राओं की अपेक्षा शैक्षिक संसाधनों एवं सुविधाओं की अधिक उपलब्धता प्राप्त होती है, जिसके परिणामस्वरूप उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी अपेक्षाकृत अधिक होनी चाहिए। किंतु वर्तमान अध्ययन के निष्कर्ष इस सामान्य धारणा से भिन्न दिखाई देते हैं। शिक्षा के प्रति बढ़ती अभिरुचि, प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण तथा अध्ययन के प्रति गंभीरता ने विद्यार्थियों की उपलब्धि में लैंगिक अंतर को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस प्रकार वर्तमान परिस्थितियां इस पारंपरिक धारणा को चुनौती देती हुई दिखाई देती हैं कि छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि अनिवार्य रूप से छात्राओं से अधिक होती है। प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का परीक्षण मानक विचलन तथा सांख्यिकीय सार्थकता के आधार पर किया गया।

मुख्य शब्द: उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, शैक्षिक उपलब्धि, छात्र, छात्राएं, लैंगिक आधार, मानक विचलन, सांख्यिकीय सार्थकता।

प्रस्तावना: शिक्षा व्यक्ति के बौद्धिक, सामाजिक एवं व्यक्तित्व विकास का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। किसी भी क्षेत्र के शैक्षिक विकास का आकलन वहां के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर किया जा सकता है। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अनेक कारकों से प्रभावित होती है जिनमें सामाजिक परिवेश, पारिवारिक वातावरण, विद्यालयी वातावरण, उपलब्ध शैक्षिक संसाधन, अभिभावकों का सहयोग तथा विद्यार्थी की व्यक्तिगत अभिरुचि और परिश्रम प्रमुख हैं। इन कारकों के साथ-साथ लिंग भी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के अध्ययन में एक महत्वपूर्ण चर के रूप में देखा जाता रहा है। उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों में शैक्षिक सुविधाओं एवं सामाजिक परिस्थितियों में पर्याप्त विविधता देखने को मिलती है। प्रतापगढ़ जिला भी राज्य के उन क्षेत्रों में सम्मिलित है, जहां विद्यालयी शिक्षा की स्थिति को विभिन्न सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियां प्रभावित करती हैं। ऐसे क्षेत्र में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान कर सकता है।

परंपरागत रूप से अनेक अध्ययनों एवं सामाजिक धारणाओं में यह माना जाता रहा है कि छात्र (बालक) और छात्राओं (बालिकाओं) की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर पाया जाता है तथा कई परिस्थितियों में छात्रों को शैक्षिक

¹शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, मानविकीय एवं सामाजिक विज्ञान संकाय, साई नाथ नाथ विश्वविद्यालय राँची, (झारखंड),

²शोध निर्देशिका, शिक्षाशास्त्र विभाग, मानविकीय एवं सामाजिक विज्ञान संकाय, साई नाथ नाथ विश्वविद्यालय राँची, (झारखंड)

अवसर एवं सुविधाएं अपेक्षाकृत अधिक प्राप्त होती हैं। इसके विपरीत वर्तमान समय में सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन, बालिका शिक्षा के प्रति बढ़ती जागरूकता छात्राओं (बालिकाओं) की शिक्षा को लेकर अभिभावकों की सकारात्मक सोच तथा शिक्षा के क्षेत्र में छात्राओं की बढ़ती भागीदारी के कारण यह आवश्यक हो गया है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का लिंग के आधार पर पुनः परीक्षण किया जाए।

प्रस्तुत शोध के माध्यम से यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि छात्रों और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर विद्यमान है अथवा नहीं। इसके लिए दोनों समूहों की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया तथा मानक विचलन एवं सांख्यिकीय सार्थकता के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किए गए। प्रस्तुत शोध प्रतापगढ़ जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में लैंगिक समानता अथवा अंतर की स्थिति को समझने में उपयोगी हो सकता है।

शैक्षिक उपलब्धि का अर्थ: शैक्षिक उपलब्धि से आशय विद्यार्थी द्वारा विद्यालय में अध्ययन के दौरान अर्जित ज्ञान, कौशल, समझ तथा विषयगत दक्षताओं के स्तर से है। यह इस बात को स्पष्ट करती है कि विद्यार्थी ने निर्धारित पाठ्यक्रम एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के माध्यम से कितनी जानकारी और विषय-वस्तु को आत्मसात किया है तथा उसमें अपेक्षित शैक्षिक परिवर्तन किस स्तर तक हुआ है। शैक्षिक उपलब्धि का आकलन सामान्यतः उपलब्धि परीक्षण, परीक्षा अथवा अन्य मूल्यांकन विधियों के माध्यम से किया जाता है। इन परीक्षणों में पाठ्यक्रम में निर्धारित विभिन्न इकाइयों एवं विषय-वस्तु से संबंधित प्रश्न सम्मिलित किए जाते हैं और विद्यार्थियों द्वारा दिए गए सही उत्तरों के आधार पर प्राप्तांकों का निर्धारण किया जाता है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों की विषयगत प्रगति, उनकी कठिनाइयों तथा उन क्षेत्रों की पहचान करने में सहायता मिलती है जहाँ अधिक अभ्यास या सुधार की आवश्यकता है।

इस प्रकार शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थियों में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के परिणामस्वरूप होने वाले परिवर्तनों को समझने का एक महत्वपूर्ण आधार है। प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को अध्ययन की प्रमुख विषय-वस्तु के रूप में ग्रहण किया गया है।

शोध के उद्देश्य

1. प्रतापगढ़ जिले के उच्चतर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का लिंग (बालक -बालिका) के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. प्रतापगढ़ जिले के उच्चतर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

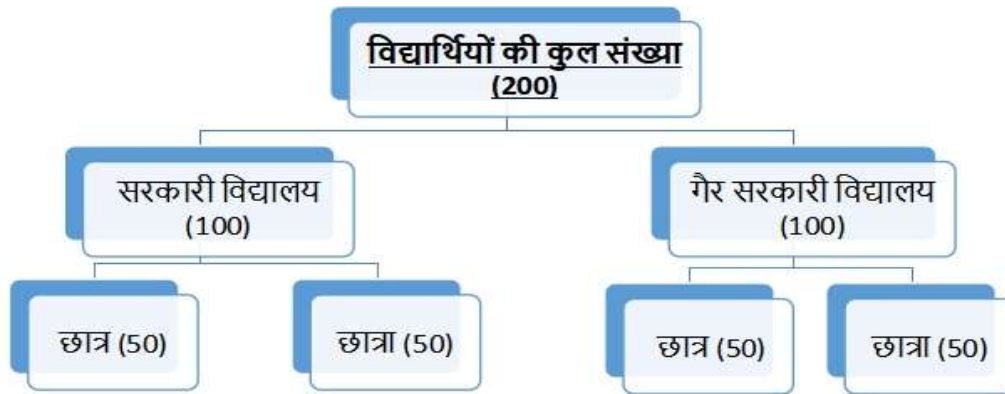
शोध की परिकल्पना: प्रतापगढ़ जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का लिंग (बालक-बालिका)के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध की सीमाएं:

- शोध का परिक्षेत्र प्रतापगढ़ जिले तक सीमित है।

- शोध के अंतर्गत यूपी बोर्ड के सरकारी तथा गैर सरकारी विद्यालयों को लिया गया है।

न्यादर्श- प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कुल 200 विद्यार्थियों को लिया गया है-



शोध कार्य विधि में प्रस्तावित प्रविधि: प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने दैव प्रतिचयन विधि द्वारा 5 सरकारी और 5 गैर सरकारी विद्यालयों का चयन किया है। प्रत्येक चयनित विद्यालय से 10 छात्र और 10 छात्राओं को भी दैव प्रतिचयन विधि से ही चुना गया है। इन विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर यह जानने का प्रयास किया जाएगा कि छात्रों और छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि में कोई अंतर विद्यमान है या नहीं। इस हेतु छात्र तथा छात्राओं के समूहों के लिए पृथक-पृथक रूप से मध्यमान, मानक विचलन और टी-मूल्य ज्ञात किया जाएगा। परिकलित टी-मूल्य की तुलना सारणीबद्ध टी मानों से 0.05 और 0.01 सार्थकता स्तरों पर की जाएगी। इसी तुलना के आधार पर परिकल्पनाओं का परीक्षण किया जाएगा, जिसके परिणामस्वरूप परिकल्पना की स्वीकृति अथवा अस्वीकृति का निर्धारण होगा।

प्रस्तुत शोध में उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् (यूपी बोर्ड) की कक्षा 10 की परीक्षा के प्राप्तांकों के प्रतिशत को आधार बनाया गया है।

विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति का लिंग (छात्र- छात्राओं) के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण

विद्यार्थियों की कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मान	सार्थकता स्तर	परिणाम
छात्र (100)	70.357	12.67	2.484	Df 198 0.05 (1.97)	अस्वीकृत
छात्रा (100)	73.808	5.710			

उपर्युक्त तालिका के अनुसार छात्रों(बालकों) का शैक्षिक उपलब्धि पर आंकड़ों का कुल मध्यमान 70.357 व प्रमाणिक विचलन 12.67 प्राप्त हुआ है और छात्राओं (बालिकाओं) का मध्यमान 73.808 व प्रमाणिक विचलन 5.710

प्राप्त हुआ है जो यह प्रदर्शित करता है कि छात्राओं (बालिकाओं) का मध्यमान छात्रों (बालकों) से अधिक है। छात्र तथा छात्राओं के मध्यमानों में अंतर का टी-मान 2.484 प्राप्त हुआ है। जो मुक्तांश (df) 198 के 0.05 सार्थकता स्तर पर दिये गये सारणी मूल्य 1.97 से अधिक है। इससे यह ज्ञात होता है कि छात्र तथा छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में विशेष अंतर विद्यमान है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष: प्रस्तुत आंकड़ों के परिकलन से यह स्पष्ट होता है कि छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के बीच सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। अध्ययन से संबंधित परिकल्पना को प्राप्त सांख्यिकीय परिणामों के आधार पर अस्वीकृत किया गया। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि प्रतापगढ़ जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में उल्लेखनीय लैंगिक अंतर विद्यमान है। अध्ययन से यह दृष्टिगत होता है कि छात्राओं (बालिकाओं) की शैक्षिक उपलब्धि छात्रों (बालकों) की तुलना में अधिक है। इस स्थिति को वर्तमान सामाजिक एवं शैक्षिक परिवर्तनों के संदर्भ में समझा जा सकता है। आज छात्र एवं छात्राएं दोनों ही अपनी शिक्षा के प्रति अधिक जागरूक हैं तथा शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए निरंतर प्रयास कर रहे हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

गुप्ता, डॉ० एस० पी० एवं गुप्ता डा० अल्का. (2014). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन,

सिंह, डॉ० अरूण कुमार, (2013), शिक्षा मनोविज्ञान, पटना: भारती भवन।

मंगल, एस० के० (2013), शिक्षा मनोविज्ञान, दिल्ली: पी०एच० लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड।

सिंह, डॉ० अरूण कुमार, (2015), मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, दिल्ली: मोती लाल बनारसी दास।

शर्मा, डॉ० आर० ए०, (2010), शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया. मेरठ: विनय रखेजा आर० लाल बुक डिपो।

श्रीवास्तव डी० एन० (2009). अनुसंधान विधियाँ, आगरा: साहित्य प्रकाशन उत्तर प्रदेश।